The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 6 | June 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 द्वारा नैतिकता व मूल्यों की पुनर्स्थापना

पूजा नेगी

(एम0 एड0, नेट– शिक्षाशास्त्र)

असिस्टेंट प्रोफेसर, आम्रपाली विश्वविद्यालय, शिक्षा नगर, लामचौड़, हल्द्वानी

ईमेल– 4433pujanegi@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020, नैतिकता, मूल्य, राष्ट्रीय एकता, वैश्वीकरण।

ABSTRACT

शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति का अनिवार्य अंग है। यह न केवल व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है, बल्कि प्रत्येक राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करके पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करती है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्र का निर्माण होता है। शिक्षा राष्ट्र की विरासत को संरक्षित करने के लिए राष्ट्र के नवयुवकों को तैयार करती है, जो नए राष्ट्र के निर्माता बनकर राष्ट्रीय एकता, अखंडता तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में अपना योगदान देते हैं। सन 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ था, उस समय भारत की शिक्षा प्रणाली तात्कालिक देशभक्तों के जीवन दर्शन व वैदिक शिक्षा प्रणाली से प्रभावित थी। तब शिक्षा प्रणाली में भारतीयता, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय एकीकरण, राष्ट्रीय सुरक्षा, नैतिकता व मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान था। परंतु जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय भावनाओं, मूल्यों व मानकों का कोई स्थान नहीं रहा। इसका मुख्य कारण पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव था। पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रभावित होती रही है, जिसका सीधा प्रभाव राष्ट्र के मानव जीवन पर पड़ने लगा। व्यक्ति में एक–दूसरे के लिए प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य, घृणा, ईर्ष्या आदि भावनाओं का विकास तेजी से होने लगा, जिससे नैतिकता व मूल्यों का हनन होने लगा। इसके फलस्वरुप समय–समय पर एक आदर्श नवीन शिक्षा प्रणाली को आकार देने की आवश्यकता पड़ती रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रीय शिक्षा नीति –1968 को आकार दिया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा नीति को राष्ट्रीय रूप से स्थापित करना था तथा

शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन करके शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना था। भारतीय संविधान के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निशुल्क करने के प्रावधान से एक और नवीन शिक्षा नीति – 1986 को आकार दिया गया, जिसकी स्थिरता वर्तमान समय तक बनी हुई है। इस नीति में राष्ट्रीय विकास के प्रति वचनबद्ध, चरित्रवान एवं कुशल युवक–युवतियों को तैयार करने का लक्ष्य रखा गया। शिक्षा नीति –1986 की समीक्षा के बाद पुनः भारत के शिक्षा ढांचे में तीसरा बड़ा सुधार नई शिक्षा नीति–2020 के रूप में हुआ, जिसका लक्ष्य ''भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति (Global Knowledge Superpower)'' बनाना है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 में भारतीय परंपराओं, भारतीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय सुरक्षा का महत्वपूर्ण स्थान मिला है। इस नीति को संपूर्ण राष्ट्र के शैक्षणिक संस्थानों में क्रियान्वित करने का प्रयास जारी है। वर्तमान शिक्षा नीति के माध्यम से हम अपनी आने वाली पीढ़ी को राष्ट्र की अस्मिता, परंपरागत मूल्यों व परंपराओं से अवगत करा सकेंगे। यह शिक्षा नीति भारतीयता की भावना से परिपूर्ण है, जो युवाओं में नैतिकता व मूल्यों का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी। प्रस्तुत शोध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में उल्लेखित नैतिकता व मूल्यों के स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है । जो 21वीं सदी के समस्त शैक्षिक समस्याओं के समाधान का का उच्चोत्तर मार्ग है।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के विषय में ज्ञान अर्जन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के विजन व सिद्धांतों के विषय में जानना।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में उल्लेखित नैतिकता व मूल्यों को व्यवहारिक जीवन से जोड़ने का प्रयास करना।

प्रस्तावना –

21वी सदी में मानव जीवन में बढ़ती प्रौद्योगिकीकरण व आधुनिकीकरण के समावेश से मानव उन्नति तो कर रहा है, परंतु उसमें प्रतिस्पर्धा की भावना तीव्र गति से बढ़ रही है। आज प्रतियोगी व प्रतिद्वंदिता का अर्थ ही बदल गया है। एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से संघर्ष व प्रतिद्वंद्वी भावना बढ़ती जा रही है। जिससे संस्कृति, सभ्यता, जाति,

धर्म, समुदाय व संप्रदाय आदि के बीच भी टकराव उपस्थित हो गया है। इसका मुख्य कारण शिक्षा का बिगड़ता स्तर है। सन 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की शिक्षा व्यवस्था वैदिक शिक्षा से प्रभावित थी, जिसमें मूल्यों, आदर्शो व नैतिक गुणों का समावेश था। उस समय की शिक्षा का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति में राष्ट्रीयता की भावना व राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना था, परंतु जैसे–जैसे आधुनिकीकरण व पश्चात्यकरण ने अपनी जगह बनाई, वैसे–वैसे भारत की शिक्षा व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं सकी।

अनियमित विज्ञान और तकनीकी विकास की होड़, मानव सभ्यता को ही नहीं, अपितु मानव अस्तित्व को भी घातक विनाश की ओर ले जा रही है। हिंसा, आतंकवाद, प्रदूषण, प्रतिद्वंद्विता और परमाणु बम के भय से ग्रसित दुनिया के तमाम देश अपने विकास और आर्थिक क्षमताओं पर गर्व करते है परन्तु कोविड–19 के विषाणु ने सबको घुटने पर लाकर रख दिया। इससे सिद्ध होता है कि विश्व में व्याप्त संसाधनों की पूर्ति एवं गरीबी के बीच निरंतर बढ़ती हुई खाई ने मनुष्य में निराशा, अवसाद, अकेलापन, लक्ष्यहीनता ,भ्रमित मूल्य प्रणाली आदि अवगुणों का विकास किया है जो मूल्यों के विनाश का कारक बनती है। यही कारक अकसर व्यक्ति में शराब, नशीली दवाओं की लत और आत्महत्या का एक गंभीर मनोवैज्ञानिक कारण बनकर भी उभरता है। व्यक्ति में भारतीय भावनाओं, मूल्यों, आदर्शों व मानकों का कोई स्थान नहीं रहा, जिसके परिणामस्वरुप भारत की मूल्यहीन शिक्षा प्रणाली को नया स्वरूप देने की आवश्यकता महसूस होने लगी।

अनेक शिक्षा आयोगों ने भी इस दिशा में निर्देश दिए हैं। सी.ए.बी.ई. (1943–46) शिक्षा केंद्रीय सलाहकार बोर्ड ने आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा पर जोर दिया। इसके अनुसार "बच्चों में मूल्यों का विकास, परिवार और समाज दोनों का दायित्व है।" साथ ही माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने भी लिखा है "कोई भी शिक्षा उस नाम के लायक नहीं है, जो जीवन जीने के लिए आवश्यक गुणों को विकसित न करे।"

भावनात्मक एकता समिति 1961 ने भी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए कुछ सिफारिशें दीं। इस समिति के अनुसार विज्ञान के छात्रों के लिए मानविकी पृष्ठभूमि आवश्यक है। इसके लिए विज्ञान के छात्रों की विषयसूची में एक भारत की सांस्कृतिक विरासत का विषय रखने का प्रस्ताव रखा गया। कोठारी आयोग (1964–1966) द्वारा की गई नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की सिफारिश के आधार पर भारत सरकार ने नैतिक शिक्षा पर कक्षाएँ शुरू कीं। स्वर्गीय पं० नेहरु ने भी यही कहा था। "हमें प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता तथा जातीयता की संकीर्णता से ऊपर उठकर भारतीय नागरिकों के बीच भावनात्मक एकता की स्थापना के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये जिससे हम अपनी विभिन्नताओं को रखते हुए भी एक सुदृण एवं सबल भारतीय राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक राष्ट्र निर्माता होता है। इसलिए व्यक्तिगत विकास को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति –1968 को लागू कर शिक्षा को नया स्वरूप प्रदान किया, इसका

उद्देश्य राष्ट्रीय प्रगति, समान नागरिकता और संस्कृति की भावना को बढ़ावा देना एव राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत करना था। शिक्षा नीति – 1968 का लक्ष्य शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन एवं शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना था। इस शिक्षा नीति में आध्यात्मिक, मूल्य व नैतिक शिक्षा को तेजी से विकसित करने की मांग रखी गई। शिक्षा नीति – 1968 की कमियों को दूर करने के लिए एवं शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक बार पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1968 की समीक्षा कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 को लाया गया, जिसमें प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य व निशुल्क करने का प्रावधान था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 के इस प्रावधान की स्थिरता वर्तमान समय में भी है। शिक्षा नीति–1986 के अंतर्गत देश के सभी नागरिकों को समान शिक्षा का अवसर प्रदान करने, मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया गया। साथ ही शैक्षिक ढांचे 10+2+3 को संपूर्ण देश में लागू किया गया। इस नीति में विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं व्यावहारिक पक्ष को प्रारंभिक शिक्षा में मुख्य स्थान दिया गया, जिसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। साथ ही नैतिकता व मूल्यों का विकास हो सके। शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एन.पी.ई. 1986) ने पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव रखा। इसके तहत सामाजिक और नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए एक शक्तिशाली शिक्षा अनिवार्य है। अश्लीलता, कट्टरता, अंधविश्वास, अशिक्षा और भाग्यवाद को खत्म करने के लिए शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने बच्चों को संवेदनशील बनाने, पर्यावरण और इसके संरक्षण की आवश्यकता पर महत्त्वपूर्ण विषयगत चिंता दिखाई और सुझाव दिए। नए तकनीकी विकल्पों और जीवित शैलियों के उद्भव के दौरान, पिछली सदी में जो पर्यावरणीय गिरावट से अमीरों और गरीबों के बीच विशाल असंतुलन पैदा हो गया है, इस पर भी 1986 की शिक्षा नीति में ध्यान केंद्रित किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 की समीक्षा कर सम्पूर्ण भारत की शिक्षा व्यवस्था में तीसरा बड़ा सुधार राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के रूप में हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 का मुख्य उद्देश्य ''भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति (ग्लोबल नॉलेज सुपरपावर)'' बनाना है। इसी मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 को संपूर्ण राष्ट्र में क्रियान्वित करने की घोषणा की गई है, जिसमें नैतिकता व मूल्य को स्थापित करने पर बल दिया गया है। इस शिक्षा नीति में ऐसी शिक्षा की बात की है कि भारतीय होने का गर्व हमारे विचारों में ना दिखे बल्कि हमारे व्यवहार, आदतों, मूल्यों एवं कौशलों में भी दिखे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 मानव अधिकार, स्थाई विकास व वैश्विक कल्याण की बात करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 के अन्य उद्देश्य व्यक्ति में सद्गुणों का विकास करना, व्यक्तित्व का विकास करना , धार्मिकता का समावेश, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्य का पालन, राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण करना आदि शामिल हैं।

हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 का उद्देश्य भारत को एक ''वैश्विक ज्ञान महाशक्ति'' बनना है, जिसके द्वारा देश वैभव ही नही, बल्कि वैश्विक उन्नति की प्राप्ति करेगा। इसलिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में अनेक दर्शनों के विचारकों के विचारों का समावेश किया गया है, जो आज की युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन करके वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देते हैं। ''शिक्षा विविध जानकारियों का ढ़ेर नहीं जो सबके मस्तिष्क में ठूंस दी जाए। हमें उन

विचारकों के विचारों को अनुभूत करना चाहिए जो जीवन निर्माण, मानव निर्माण व चरित्र निर्माण में सहायक हो।'' इन कथनों का अनुसरण करने वाले महान विचारक स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का नई शिक्षा नीति – 2020 में समावेश किया गया है जो मूल्य, नैतिकता व मानवता को शक्ति प्रदान करते हैं।

मार्टिन लूथर के अनुसार "बुद्धिमान और चरित्र ही सच्ची शिक्षा का लक्ष्य है।" साथ ही सी.वी. गुड ने लिखा है "मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौंदर्य–बोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।" स्पष्ट है कि उन्होंने भी मूल्यों के सकारात्मक पक्ष पर ही विश्वास प्रकट किया। सी.एस. लुईस ने भी मूल्यों पर अपना मत दिया है कि "मूल्यों के अभाव में शिक्षा की उपयोगिता मात्र मनुष्य को अधिक चतुर–शैतान बनाने के लिए है।"

चाणक्य के अनुसार "पलायन व निर्माण दोनों शिक्षक के गोद में खेलती है।" एक अध्यापक का कर्तव्य मूल्य शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में अच्छी जीवन–शैली, रिश्तों को विकसित करने , लोगों के बीच मतभेदों का सम्मान करने, नागरिकों के रूप में सक्रिय भूमिका निभाने , अपनी प्रतिभा व कौशल का अधिकतम लाभ उठाने के लिए आत्मविश्वास और जिम्मेदारी बनाएं रखने की क्षमता का विकास करना है।

मूल्य व नैतिकता हमारी भारतीय संस्कृति की मूल्यवान धरोहर है, जिसे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 के द्वारा पुनः स्थापित कर गौरव व गरिमा के साथ विश्व पटल पर प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए वर्तमान में तकनीकी, चिकित्सा व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों सहित अन्य पाठ्यक्रमों में भी भारतीय भाषा को विकल्प के रूप में लिया गया है। नई शिक्षा नीति में शिक्षक व अभिभावकों को प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्ट क्षमताओं को पहचाने एवं उन्हें स्वीकार करके विकसित करने पर बल देने की सिफारिश की गयी है, जिससे विद्यार्थी का चरित्र निर्माण किया जा सके एवं उसके सर्वांगीण विकास के लिए उचित योजना बनायी जा सके। विद्यार्थियों में भारतीय विचारधारा का विकास करने एवं अपनी संस्कृति का संरक्षण कर उसके प्रचार–प्रसार करने के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति– 2020 में भारतीय विचारधारा व संस्कृति से सम्बन्धित विषयवस्तु को पाठ्यचर्या में शामिल करने का प्रयास किया गया है। यह नीति मानव को मूल्यों व नैतिकता युक्त संतुलित व सुखमय जीवन जीने में सहयोगी है। इस नीति द्वारा व्यक्ति में अहिंसा, प्रेम, सहिष्णुता, समानता, बंधुत्व आदि भावनाओं को विकसित कर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता स्थापित की जा सकती है। एक प्राणी को मानव उद्घोषित करने के लिए नैतिकता व मूल्य हमारे जीवन में निम्न प्रकार सहायक हैं–

1. व्यक्ति में देशभक्ति की भावना व एक अच्छे नागरिक गुणों को विकसित करते है।
2. जनतांत्रिक व लोकतांत्रिक गठबंधन की भावना विकसित करते हैं।
3. विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों, सम्प्रदायों, विश्वासों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करते हैं।
4. रूढ़िवादी व संकीर्ण मानसिकता को खत्म करते हैं।

5. व्यक्ति में ईमानदारी, जिम्मेदारी, दया, प्रेम, सहिष्णुता, बंधुत्व, समता, समानता आदि गुणों को विकसित करते हैं।
6. राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय बंधुत्व की भावना को बढ़ावा देते हैं।
7. इनके द्वारा व्यक्ति के शरीरिक, मानसिक, भावनात्मक व आध्यात्मिक पहलुओं को विकसित कर उसका सर्वांगीण विकास किया जाता है।
8. वसु धैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित कर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया जाता है।

हमारे जीवन में मूल्य और नैतिकता का अत्यधिक महत्व है। मानव के विचार जैसे होते हैं, वैसा ही उसका व्यवहार भी प्रदर्शित होता है। माना जाता है कि शिक्षा अच्छे विचारों को जन्म देती है और कुविचारों का नाश करती है। यदि किसी व्यक्ति में अनैतिक विचारों का जन्म होता है तो उसे एकमात्र शिक्षा द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है। नैतिकता व मूल्यों के विकास से उच्च चरित्रवान व अच्छे विचारों वाला व्यक्ति तैयार किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र की एकता व अखंडता को बनाए रखा जा सकता है। इन्हीं उद्देश्यों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 को आदर्श स्वरूप प्रदान कर एक बार पुनः नैतिकता व मूल्य की स्थापना की गई है, जिसमें विशेषकर भारतीय मूल्यों एवं परंपराओं का समावेश किया गया है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में विद्यालयी शिक्षा प्रणाली और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नैतिकता व मूल्यों को पुनः स्थापित किया गया है। मूल्य व नैतिकता को शैक्षिक तथा सामाजिक दोनों आधारों पर उपयोगी व व्यवहार परक बनाने पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय मूल्यों, आदर्शों, विचारों, मान्यताओं व मानकों को प्राप्त करने व बनाए रखने के लिए नैतिकता व मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में मानव जीवन के मुख्य दो लक्ष्य सुख और समृद्धि पर बल दिया गया है। सुख के लिए आध्यात्मिक मूल्यों को महत्व दिया गया है, जिसका आधार नैतिकता व मूल्य है। समृद्धि के लिए सैद्धांतिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा कौशलों के विकास को महत्व दिया गया है, जिससे व्यक्ति को भौतिक सुखों की प्राप्ति हो सके और वह आर्थिक रूप से समृद्ध बन सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 समस्त मानव जीवन के मूल्यों व नैतिकता को धारण करती है, जो भारतीय संस्कृति के संरक्षण व हस्तांतरण के लिए अति आवश्यक होगी। यह शिक्षा नीति मूल्य व नैतिकता विकसित करने के लिए उपयोगी सिद्ध होगी एवं भविष्य में इसके दूरगामी परिणाम होंगे। यह मूल्य व नैतिकता को स्थापित कर भारत को समृद्ध व शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में सहायक होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. तोमर, एल. (2014), भारतीय शिक्षा के मूल तत्व , नई दिल्ली : सुरुचि प्रकाशन ।
2. सक्सेना, एन. आर. (1979), शिक्षा दर्शन का स्वरूप. मेरठ : नेशनल पब्लिशिंग हाउस ।
3. कुमार, बी. (1988), स्वामी विवेकानंद का दार्शनिक चिंतन, नई दिल्ली : भारतीय विद्यापीठ ।
4. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
5- https://www.hindisamay.com/e&content/Mulya&Aadharit%20Shiksha%20by%20Ramesh%20Pokhariyalji1-pdf
6- https://www&hindisamay&com/e&content/Mulya&Aadharit%20Shiksha%20by%20Ramesh%20Pokhariyalji1&pdf